الجزء

وَ اِذَا سَمِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَى
الرَّسُوْلِ تَرٰۤى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ
الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ
يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ
الشّٰهِدِيْنَ ﴿۸۳﴾

83. और (येही वजह है कि उनमें से बा'ज़ सच्चे ईसाई) जब इस (क़ुर्आन) को सुनते हैं जो रसूल (ﷺ) की तरफ़ उतारा गया है तो आप उनकी आँखों को अश्करेज़ देखते हैं। (येह आँसुओं का छलकना) उस हक़ के बाइस (है) जिसकी उन्हें मा'रेफ़त (नसीब) हो गई है। (साथ येह) अर्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब! हम (तेरे भेजे हुऐ हक़ पर) ईमान ले आए हैं सो तू हमें (भी हक़ की) गवाही देनेवालों के साथ लिख ले।

وَ مَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ مَا جَآءَنَا
مِنَ الْحَقِّ ۙ وَ نَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا
رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۴﴾

84- और हमें क्या है कि हम अल्लाह पर और उस हक़ (या'नी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ और क़ुर्आने मजीद) पर जो हमारे पास आया है, ईमान न लाएं, हालांकि हम (भी येह) तमा' रखते हैं कि हमारा रब हमें नेक लोगों के साथ (अपनी रहमतो जन्नत में) दाख़िल फ़रमा दे।

فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۵﴾

85- सो अल्लाहने उन की इस (मो'मिनानह) बात के इवज उन्हें सवाब में जन्नतें अ़ता फ़रमा दीं जिनके नीचे नेहरें बेह रही हैं (वोह) उन में हमेशा रहनेवाले हैं, और येही नेकूकारों की जज़ा है।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۸۶﴾ ع

86- और जिन लोगोंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया वोही लोग दोज़ख़ (में रेहने) वाले हैं।

ع ١١ ٩ ١

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا
طَيِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا
تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۸۷﴾

87- ऐ ईमानवालो! जो पाकीज़ा चीजें अल्लाहने तुम्हारे लिए हलाल की हैं उन्हें (अपने ऊपर) हराम मत ठेहराओ और न (ही) हदसे बढ़ो, बेशक अल्लाह हदसे तजावुज़ करनेवालों को पसंद नहीं फ़रमाता।

وَ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا

88- और जो हलाल पाकीज़ा रिज़्क़ अल्लाहने तुम्हें अ़ता

طَيِّبًا ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ
مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾
لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ
اَيْمَانِكُمْ وَ لٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا
عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ
اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ
اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ
كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ
كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ
وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ
وَالْمَيْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ
رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾
اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ
بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي
الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَ يَصُدَّكُمْ عَنْ
ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ
اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾

फ़रमाया है उसमें से खाया करो और अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो।

89- अल्लाह तुम्हारी बे मक़्सद (और ग़ैर सन्जीदह) क़स्मों में तुम्हारी गिरफ़्त नहीं फ़रमाता लेकिन तुम्हारी उन (सन्जीदह) क़स्मों पर गिरफ़्त फ़रमाता है जिन्हें तुम (इरादी तौर पर) मज़बूत कर लो, (अगर तुम ऐसी क़सम को तोड़ डालो) तो उसका कफ़्फ़ारह दस मिस्कीनों को औसत (दर्जे का) खाना खिलाना है जो तुम अपने घरवालों को खिलाते हो या (इसी तरह) उन (मिस्किनों) को कपड़े देना है या एक गर्दन (या'नी गुलाम या बांदी को) आज़ाद करना है, फिर जिसे (येह सब कुछ) मुयस्सर न हो तो तीन दिन रोज़ा रखना है। येह तुम्हारी क़स्मों का कफ़्फ़ारा है जब तुम खा लो (और फिर तोड़ बैठो) और अपनी क़स्मों की हिफ़ाज़त किया करो, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें ख़ूब वाज़ेह फ़रमाता है ताकि तुम (उसके अह़काम की इताअ़त कर के) शुक्र गुज़ार बन जाओ।

90- ऐ ईमानवालो! बेशक शराब और जुआ और (इबादत के लिए) नसब किए गए बुत और (क़िस्मत मा'लूम करने के लिए) फ़ाल के तीर (सब) नापाक शैतानी काम हैं। सो तुम उनसे (कुल्लिय्यतन) परहेज़ करो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ।

91- शैतान येही चाहता है कि शराब और जूए के ज़रीए तुम्हारे दरमियान अ़दावत और कीना डलवा दे और तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज़से रोक दे। क्या तुम (इन शर्र अंगेज़ बातों से) बाज़ आओगे?

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾

92- और तुम अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल (ﷺ)की इताअ़त करो और (ख़ुदा और रसूल ﷺ की मुख़ालिफ़त से) बचते रहो, फिर अगर तुमने रूगर्दानी की तो जान लो कि हमारे रसूल (ﷺ)पर सिर्फ़ (अह़काम का) वाज़ेह़ तौर पर पहुंचा देना ही है (और वोह येह फ़रीज़ा अदा फ़रमा चुके हैं)।

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع ١٢ ٢

93- उन लोगों पर जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे उस (ह़राम) में कोई गुनाह नहीं जो वोह (ह़ुक्मो ह़ुरमत उतरने से पहले) खा पी चुके हैं जबकि वोह (बक़िया मुआ़मलात में) बचते रहे और (दीगर अह़कामे इलाही पर) ईमान लाए और आ'माले सालिह़ा पर अ़मल पैरा रहे, फिर (अह़कामे ह़ुरमत के आ जाने के बाद भी इन सब ह़राम अश्या से) परहेज़ करते रहे और (उनकी ह़ुरमत पर सिद्क़ दिलसे) ईमान लाए, फिर साह़िबाने तक़्वा हुऐ और (बिल आख़िर) साह़िबाने एह़सान (या'नी अल्लाह के ख़ास महबूबो मुक़र्रिबो नेकूकार बंदे) बन गए, और अल्लाह एह़सानवालों से मह़ब्बत फ़रमाता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾

94- ऐ ईमानवालो! अल्लाह किसी क़दर (ऐसे) शिकार से तुम्हें ज़रूर आज़माएगा जिस तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुंच सक्ते हैं ताकि अल्लाह उस शख़्स की पहचान करवा दे जो उससे ग़ाइबाना डरता है फिर जो शख़्स उसके बाद (भी) ह़द से तजावुज़ कर जाए तो उसके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۭ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاۗءٌ مِّثْلُ مَا

95- ऐ ईमानवालो ! तुम एह़राम की ह़ालतमें शिकार को मत मारा करो, और तुम में से जिसने (बह़ालते एह़राम) क़स्दन उसे मार डाला तो (उसका) बदला मवेशियों में से उसी के बराबर (कोई जानवर) है जिसे

قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا
عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ
كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ
ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ
اَمْرِهٖ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَ
مَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَ اللّٰهُ
عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

उसने क़त्ल किया है जिसकी निस्बत तुम में से दो आ़दिल शख़्स फ़ैसला करें (कि वाक़ई येह जानवर उस शिकार के बराबर है बशर्ते कि) वोह क़ुरबानी का'बा पहुंचनेवाली हो या (उसका) कफ़्फ़ारा चंद मोहूताजों का खाना है (या'नी जानवरकी क़ीमत के बराबर मा'मूल का खाना जितने ही मोहूताजों को पूरा आ जाए) या उसके बराबर (या'नी जितने मोहताजों का खाना बने इस क़दर) रोज़े हैं ताकि वोह अपने किए (के बोझ) का मज़ा चख्खे। जो कुछ (इससे) पहले हो गुज़रा अल्लाहने उसे मुआ़फ़ फ़रमा दिया, और जो कोई (ऐसा काम) दोबारा करेगा तो अल्लाह उससे (ना फ़रमानी) का बदला ले लेगा, और अल्लाह बड़ा ग़ालिब बदला लेनेवाला है।

اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ
مَتَاعًا لَّكُمْ وَ لِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ
عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾

96- तुम्हारे लिए दरिया का शिकार और उसका खाना तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ाइदे की ख़ातिर ह़लाल कर दिया गया है और ख़ुश्की का शिकार तुम पर ह़राम किया गया है जब तककि तुम ह़ालते एह़राम में हो, और अल्लाह से डरते रहो जिसकी (बारगाह की) तरफ़ तुम (सब) जमा' किए जाओगे।

جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ
قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَ
الْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ؕ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِي الْاَرْضِ وَ اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ﴿٩٧﴾

97- अल्लाहने इ़ज़्ज़त (व अदब) वाले घर का'बा को लोगों के (दीनी व दुन्यवी उमूर में) क़ियामे (अम्न) का बाइस बना दिया है और ह़ुरमतवाले महीनेको और का'बा की क़ुरबानी को और गले में अ़लामती पट्टेवाले जानवरों को भी (जो ह़रमे मक्का में लाए गएं हों सबको उसी निस्बत से इ़ज़्ज़तो एह़तिराम अ़ता कर दिया गया है), येह इस लिए कि तुम्हें इ़ल्म हो जाए कि जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ख़ूब जानता है और अल्लाह हर चीज से बहुत वाक़िफ़ है।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَ
اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٨﴾ ؕ
مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ

98 जान लो कि अल्लाह सख़्त गिरफ़्तवाला है और येह कि अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमाने वाला (भी) है।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا
تَكْتُمُوْنَ ﴿۹۹﴾

99- रसूल (ﷺ) पर (अह्‌काम कामिलन) पहुंचा देने के सिवा (कोई और ज़िम्मेदारी) नहीं, और अल्लाह वोह (सब) कुछ जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो।

قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَ الطَّيِّبُ
وَ لَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ
فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ ع ۱۳ ۳

100- फ़रमा दीजिए : पाक और नापाक (दोनों) बराबर नहीं हो सक्ते (ऐ मुख़ातिब!) अगरचे तुम्हें नापाक (चीज़ों) की कसरत भली लगे। पस ऐ अ़क्लमन्द लोगो! तुम (कसरतो क़िल्लत का फ़र्क़ देखने की बजाए) अल्लाह से डरा करो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا
عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ
وَ اِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ
الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ
وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۰۱﴾

101- ऐ ईमानवालो! तुम ऐसी चीज़ों की निस्बत सवाल मत किया करो (जिन पर क़ुरआन ख़ामोश हो) कि अगर वोह तुम्हारे लिए ज़ाहिर कर दी जाएं तो तुम्हें मशक़्क़त में डाल दें (और तुम्हें बुरी लगें), और अगर तुम उनके बारे में उस वक़्त सवाल करोगे जबकि क़ुरआन नाज़िल किया जा रहा है तो वोह तुम पर (नुज़ूले हुक्म के ज़रीए) ज़ाहिर (या'नी मुतअ़य्यन) कर दी जाएंगी (जिस से तुम्हारी सवाब दीद ख़त्म हो जाएगी और तुम एक ही हुक्म के पाबंद हो जाओगे)। अल्लाहने इन (बातों और सवालों) से (अब तक) दरगुज़र फ़रमाया है, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बुर्दबार है।

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ
اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾

102- बेशक तुम से पहले एक क़ौमने ऐसी (ही) बातें पूछी थीं, (जब वोह बयान कर दी गईं) फिर वोह उनके मुन्किर हो गए।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيْرَةٍ وَّ لَا
سَآئِبَةٍ وَّ لَا وَصِيْلَةٍ وَّ لَا حَامٍ ۙ وَّ لٰكِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ ؕ وَ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۳﴾

103- अल्लाहने न तो बहीरह को (अम्रे शरई) मुक़र्रर किया है, और न साइबह को और न वसीलह को और न हाम को, लेकिन काफ़िर लोग अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधते हैं, और उनमें से अक्सर अ़क़्ल नहीं रखते।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا
حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ
اَوَ لَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ
شَيْـًٔا وَّ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۴﴾

104- और जब उनसे कहा जाता है कि इस (क़ुरआन) की तरफ़ जिसे अल्लाहने नाज़िल फ़रमाया है और रसूल (मुकर्रम ﷺ) की तरफ़ रुजूअ़ करो तो केहते हैं, हमें वोही (तरीक़ा) काफ़ी है जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया, अगरचे उनके बाप दादा न कुछ (दीनका) इ़ल्म रखते हों और न ही हिदायत याफ़्ता हों।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ
اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا
اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

105- ऐ ईमानवालो! तुम अपनी जानों की फ़िक्र करो, तुम्हें कोई गुमराह नुक़्सान नहीं पहुंचा सक्ता अगर तुम हिदायत याफ़्ता हो चुके हो, तुम सबको अल्लाह ही की तरफ़ पलटना है, फिर वोह तुम्हें उन कामों से ख़बरदार फ़रमा देगा जो तुम करते रहे थे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ
اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ
الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ
اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ
ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ
مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ
بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ
ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ بِهٖ ثَمَنًا وَّ لَوْ
كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَ لَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ ۙ
اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ﴿۱۰۶﴾

106- ऐ ईमानवालो! जब तुम में से किसी की मौत आए तो वसिय्यत करते वक़्त तुम्हारे दरमियान गवाही (के लिए) तुम में से दो आ़दिल शख़्स हों, या तुम्हारे ग़ैरों में से (कोई) दूसरे दो शख़्स हों अगर तुम मुल्क में सफ़र कर रहे हो फिर (उसी ह़ाल में) तुम्हें मौत की मुसीबत आ पहुंचे तो तुम उन दोनों को नमाज़ के बाद रोक लो, अगर तुम्हें (उन पर) शक गुज़रे तो वोह दोनों अल्लाहकी क़स्में खाएं कि हम इसके इ़वज़ कोई क़ीमत ह़ासिल नहीं करेंगे ख़्वाह कोई (कितना ही) क़राबतदार हो और न हम अल्लाह की (मुक़र्रर कर्दह ) गवाही को छुपाएंगे (अगर छुपाएं तो) हम उसी वक़्त गुनाहगारों में हो जाएंगे।

فَاِنْ عُثِرَ عَلٰۤى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّاۤ اِثْمًا
فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ

107- फिर अगर इस (बात)की इत्तिलाअ़ हो जाए कि वोह दोनों (सह़ीह़ गवाही छुपाने के बाइ़स) गुनाह के

الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَآ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَآ ۖ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

सज़ावार हो गए हैं तो उनकी जगह दो और (गवाह) उन लोगों में से खड़े हो जाएं जिनका हक़ पहले दो (गवाहों)ने दबाया है (वोह मय्यित के ज़ियादा क़राबतदार हों) फिर वोह अल्लाह की क़सम खाएं कि बेशक हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़ियादा सच्ची है और हम (हक़ से) तजावुज़ नहीं कर रहे, (अगर ऐसा करें तो) हम इसी वक़्त ज़ालिमों में से हो जाएंगे।

ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَآ اَوْ يَخَافُوْٓا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٨﴾ ع ١٤

108- येह (तरीक़ा) इस बात से क़रीबतर है कि लोग सहीह तौर पर गवाही अदा करें या इस बातसे ख़ौफ़ ज़दा हों कि(ग़लत गवाही की सूरत में) उनकी क़स्मों के बाद (वोही) क़स्में (ज़ियादा क़रीबी वुरसाअ की तरफ़) लौटाई जाएंगी, और अल्लाह से डरते रहो और (उस के अहकाम को ग़ौर से) सुना करो, और अल्लाह ना फ़रमान क़ौम को हिदायत नहीं देता।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ۖ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١٠٩﴾

109- (उस दिन से डरो) जिस दिन अल्लाह तमाम रसूलों को जमा' फ़रमाएगा फिर (उनसे) फ़रमाएगा कि तुम्हें (तुम्हारी उम्मतों की तरफ़ से दा'वते दीन का) क्या जवाब दिया गया था? वोह (हुज़ूरे इलाही में) अ़र्ज़ करेंगे : हमें कुछ इल्म नहीं, बेशक तू ही ग़ैब की सब बातों का ख़ूब जाननेवाला है।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۖ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ

110- जब अल्लाह फ़रमाएगा : ऐ ईसा इब्ने मरयम ! तुम अपने ऊपर और अपनी वालिदह पर मेरा एहसान याद करो जब मैंने पाक रूह (जिब्राईल) के ज़रीए तुम्हें तक़्वियत बख़्शी, तुम गहवारे में (बएहदे तुफ़ूलियत) और पुख़्ता उ़म्री में (बएहदे तब्लीग़ो रिसालत यक्सां अंदाज़ से) लोगों से गुफ़्तगू करते थे और जब मैं ने तुम्हें किताब और हिक्मत (व दानाई) और तौरात और इन्जील सिखाई और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी के गारे से परिन्दे

وقف لازم

مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَ اِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَ اِذْ كَفَفْتُ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۱۰﴾

की शक्ल के मानिन्द (मूर्ति) बनाते थे फिर तुम उसमें फूंक मारते थे तो वोह (मूर्ति) मेरे हुक्म से परिन्दा बन जाती थी और जब तुम मादरज़ाद अँधों और कोढ़ियों (या'नी बर्सज़दा मरीज़ों) को मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे, और जब तुम मेरे हुक्म से मुर्दों को (ज़िन्दा कर के क़ब्र से) निकाल (खड़ा कर) देते थे और जब मैं ने बनी इसराईल को तुम्हारे (क़त्ल) से रोक दिया था जब कि तुम उनके पास वाज़ेह निशानियां ले कर आए तो उनमें से काफ़िरों ने (येह) केह दिया कि येह तो खुले जादू के सिवा कुछ नहीं।

وَ اِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَ بِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

111- और जब मैं ने ह़वारियों के दिलमें (येह) डाल दिया कि तुम मुझ पर और मेरे पयग़म्बर (ईसा ﷺ)पर ईमान लाओ, (तो) उन्हों ने कहा : हम ईमान ले आए और तू गवाह हो जा कि हम यक़ीनन मुसलमान हैं।

اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾

112- और (येह भी याद करो) जब ह़वारियों ने कहा : ऐ ईसा इब्ने मरयम ! क्या तुम्हारा रब ऐसा कर सक्ता है कि हम पर आस्मान से (खानेका) ख़्वान उतार दे? (तो) ईसा (ﷺ) ने (जवाबन) कहा : (लोगो!) अल्लाह से डरो अगर तुम साहिबे ईमान हो।

قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَ تَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَ نَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۱۱۳﴾

113- वोह केहने लगे : हम (तो सिर्फ़) येह चाहते हैं कि उसमें से खाएं और हमारे दिल मुत्मइन हो जाएं और हम (मज़ीद यक़ीन से) जान लें कि आपने हम से सच कहा है और हम उस (ख़्वाने ने'मत के उतरने) पर गवाह हो जाएं।

قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۱۱۴﴾

114- ईसा इब्ने मरयम (عليه السلام) ने अ़र्ज किया : ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! हम पर आस्मान से ख़्वाने (ने'मत)नाज़िल फ़रमा दे कि(उसके उतरने का दिन) हमारे लिए ईद हो जाए, हमारे अगलों के लिए (भी) और हमारे पिछलों के लिए (भी), और (वोह ख़्वान) तेरी तरफ़ से निशानी हो, और हमें रिज़्क़ अ़ता कर और तू सबसे बेहतर रिज़्क़ देनेवाला है।

قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ ع ۱۵ ۱۵

115- अल्लाह ने फ़रमाया : बेशक मैं उसे तुम पर नाज़िल फ़रमाता हूं, फिर तुम में से जो शख़्स (उस के) बाद कुफ़्र करेगा तो यक़ीनन मैं उसे ऐसा अ़ज़ाब दूंगा कि तमाम जहानवालों में से किसी को भी ऐसा अ़ज़ाब न दूंगा।

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ۗ بِحَقٍّ ؕ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ؕ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿۱۱۶﴾

116- और जब अल्लाह फ़रमाएगा : ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या तुमने लोगों से कहा था कि तुम मुझको और मेरी मां को अल्लाह के सिवा दो मा'बूद बना लो? वोह अ़र्ज़ करेंगे : तू पाक है, मेरे लिए येह (रवा) नहीं कि मैं ऐसी बात कहूं जिसका मुझे कोई ह़क़ नहीं। अगर मैं ने येह बात कही होती तो यक़ीनन तू उसे जानता, तू हर उस (बात) को जानता है जो मेरे दिलमें है और मैं उन (बातों) को नहीं जानता जो तेरे इल्म में हैं। बेशक तू ही ग़ैब की सब बातों को ख़ूब जाननेवाला है।

مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ

117- मैंने उन्हें सिवाए इस (बात) केकुछ नहीं कहा था जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था कि तुम (सिर्फ़) अल्लाह की इ़बादत किया करो जो मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है और मैं उन (के अ़क़ाइदो आ'माल) पर (उस

فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ
الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۭ وَاَنْتَ عَلٰي كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١١٧﴾

वक़्त तक) ख़बरदार रहा जब तक मैं उन लोगों में मौजूद रहा । फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो तूही उन (के ह़ालात)पर निगेहबान था, और तू हर चीज़ पर गवाह है।

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَ
اِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿١١٨﴾

118- अगर तू उन्हें अ़ज़ाब दे तो वोह तेरे (ही) बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही बड़ा ग़ालिब ह़िक्मतवालाहै।

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ
الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۭ لَهُمْ جَنّٰتٌ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ اَبَدًا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا
عَنْهُ ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾

119- अल्लाह फ़रमाएगा : येह ऐसा दिन है (जिस में) सच्चे लोगों को उनका सच फ़ाइदा देगा । उनके लिए जन्नतें हैं जिनके नीचे नेहरें जारी हैं। वोह उनमें हमेशा हमेशा रहनेवाले हैं। अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वोह उस से राज़ी हो गए, येही (रज़ाऐ इलाही) सब से बड़ी कामयाबी है।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
فِيْهِنَّ ۭ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢٠﴾ ع ١٢ ع ٥ ٦

120- तमाम आस्मानों और ज़मीन की और जो कुछ उनमें है (सब की) बादशाही अल्लाह ही के लिए है, और वोह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

आयातुहा 165 | 6 सूरतुल अन्आ़मि मक्किय्यतुन 55 | रुकूआ़तुहा 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۭ ثُمَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١﴾

1- तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने आस्मानों और ज़मीनको पैदा फ़रमाया और तारीकियों और रौशनी को बनाया, फिर भी काफ़िर लोग (मा'बूदाने बातिला को) अपने रब के बराबर ठेहराते हैं।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ

2- (अल्लाह) वोही है जिसने तुम्हें मिट्टी के गारे से पैदा

قَضٰٓى اَجَلًا ؕ وَ اَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝٢

फ़रमाया (या'नी कुर्ऐ अरज़ी पर ह़याते इन्सानी की कीमियाई इब्तिदा इससे की)। फिर उसने (तुम्हारी मौत की) मीआ़द मुक़र्रर फ़रमा दी, और (इन्इक़ादे क़ियामत का) मुअ़य्यना वक़्त उसी के पास (मुक़र्रर) है फिर(भी) तुम शक करते हो।

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ فِي الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝٣

3- और आस्मानोंमें और ज़मीनमें वोही अल्लाह ही (मा'बूदे बर ह़क़्) है, जो तुम्हारी पोशीदह और तुम्हारी ज़ाहिर (सब बातों) को जानता है और जो कुछ तुम कमा रहे हो वोह (उसे भी) जानता है।

وَ مَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝٤

4- और उनके रबकी निशानियों में से उनके पास कोई निशानी नहीं आती मगर (येह कि) वोह उससे रूगर्दानी करते हैं।

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٥

5- फिर बेशक उन्हों ने (इसी तरह़) ह़क़् (या'नी क़ुर्आन) को (भी) झुटला दिया जब वोह उनके पास (उलूही निशानी के तौर पर) आया, पस अ़नक़रीब उनके पास उसकी ख़बरें आया चाहती हैं जिसका वोह मज़ाक उड़ाते थे।

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَ اَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّ جَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝٦

6- क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी ही क़ौमों को हलाक कर दिया जिन्हें हमने ज़मीनमें (ऐसा मुस्तह़कम) इक़्तिदार दिया था कि ऐसा इक़्तिदार (और जमाव) तुम्हें भी नहीं दिया और हमने उन पर लगातार बरसने वाली बारिश भेजी और हमने उन (के मकानातो महल्लात) के नीचे से नेहरें बहाईं फिर (इतनी पुर इ़शरत ज़िन्दगी देने के बावजूद) हमने उनके गुनाहों के बाइ़स उन्हें हलाक कर दिया और उनके बाद हमने दूसरी उम्मतों को पैदा किया।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ

7- और हम अगर आप पर काग़ज पे लिखी हुई किताब नाज़िल फ़रमा देते फिर येह लोग उसे अपने हाथों से छू भी

كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧

लेते तब (भी) काफ़िर लोग (येही) केहते कि येह सरीह़ जादू के सिवा (कुछ) नहीं।

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۭ وَ
لَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ
لَا يُنْظَرُوْنَ ۝٨

8- और वोह (कुफ़्फ़ार) केहते हैं कि इस (रसूले मुकर्रम) पर कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया (जिसे हम ज़ाहिरन देख सक्ते और वोह उनकी तस्दीक़ कर देता) और हम अगर फ़रिश्ता उतार देते तो (उनका) काम ही तमाम हो चुका होता फिर उन्हें (ज़रा भी) मोहलत न दी जाती।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا
وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝٩

9- और अगर हम रसूलको फ़रिश्ता बनाते तो उसे भी आदमी ही (की सूरत) बनाते और हम उन पर (तब भी) वही शुब्हा वारिद कर देते जो शुब्हा (व इल्तिबास) वोह (अब) कर रहे हैं (या'नी उसकी भी ज़ाहिरी सूरत देख कर केहते कि येह हमारी मिस्ल बशर है)।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ
قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا
مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠

10- और बेशक आपसे पहले (भी) रसूलों के साथ मज़ाक़ किया जाता रहा । फिर उनमें से मस्ख़रापन करनेवालों को (ह़क़ के) उसी (अ़ज़ाब)ने आ घेरा जिसका वोह मज़ाक़ उड़ाते थे।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝١١

11- फ़रमा दीजिए कि तुम ज़मीन पर चलो फिरो, फिर (निगाहे इ़ब्रत से) देखो कि (ह़क़ को) झुटलानेवालों का अंजाम कैसा हुवा।

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ
قُلْ لِّلّٰهِ ۭ كَتَبَ عَلٰي نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۭ
لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ
فِيْهِ ۭ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٢

12- आप (उनसे सवाल) फ़रमाएं कि आस्मानों और ज़मीनमें जो कुछ है किसका है? (फिर येह भी) फ़रमा दें कि अल्लाह ही का है, उसने अपनी ज़ात (के ज़िम्मए करम) पर रह़मत लाज़िम फ़रमा ली है, वोह तुम्हें रोज़े क़ियामत जिसमें कोई शक नहीं ज़रूर जमा' फ़रमाएगा। जिन्होंने अपनी जानों को (दाइमी) ख़सारे में डाल दिया है, सो वोह ईमान नहीं लाएंगे।

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ

13- और वोह (सारी मख़्लूक़) जो रात में और दिन में

وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣﴾

आराम करती है, उसी की है, और वोह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٤﴾

14- फ़रमा दीजिए : क्या मैं किसी दूसरे को (इबादत के लिए अपना) दोस्त बना लूं (उस) अल्लाह के सिवा जो आस्मानों और ज़मीन का पैदा करनेवाला है और वोह (सब को) खिलाता है और (खुद उसे) खिलाया नहीं जाता। फ़रमा दें : मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं (उसके हुजूर) सबसे पहला (सर झुकानेवाला) मुसलमान हो जाऊं और (येह भी फ़रमा दिया गया है कि) तुम मुशरिकों में से हरगिज़ न हो जाना।

قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾

15- फ़रमा दीजिए कि बेशक मैं (तो) बडे अ़ज़ाब के दिनसे डरता हूं, अगर मैं अपने रब की ना फ़रमानी करूं (सो येह कैसे मुम्किन है?)।

مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

16- उस दिन जिस शख़्स से वोह(अ़ज़ाब) फेर दिया गया तो बेशक (अल्लाह ने) उस पर रहम फ़रमाया, और येही (उख़्वी बख़्शिश) खुली कामयाबी है।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾

17- और अगर अल्लाह तुझे कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उसके सिवा उसे कोई दूर करनेवाला नहीं, और अगर वोह तुझे कोई भलाई पहुंचाए तो वोह हर चीज़ पर ख़ूब क़ादिर है।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾

18- और वोही अपने बंदों पर ग़ालिब है, और वोह बड़ी हिक्मतवाला ख़बरदार है।

قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ قف شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۫ قف وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ

19- आप (उनसे दरयाफ़्त) फ़रमाइए कि गवाही देने में सब से बढ़ कर कौन है? आप (ही) फ़रमा दीजिए कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह है, और मेरी तरफ़ येह क़ुर्आन इस लिए वह्यी किया गया है कि इसके ज़रीए तुम्हें और हर उस शख़्स को जिस तक (येह क़ुर्आन)

اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ؕ قُلْ لَّاۤ
اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ
اِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹﴾

पहुंचे डर सुनाऊं। क्या तुम वाक़ई इस बातकी गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे मा'बूद (भी) हैं? आप फ़रमा दें : मैं(तो इस ग़लत बात की) गवाही नहीं देता, फ़रमा दीजिए : बस मा'बूद तो वोही एक ही है और मैं उन (सब) चीज़ों से बेज़ार हूं जिन्हें तुम (अल्लाह का) शरीक ठेहराते हो।

اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَعْرِفُوْنَهٗ
كَمَا یَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِیْنَ
خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰﴾ ع

20- वोह लोग जिन्हें हमने किताब दी थी इस (नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां ﷺ को वैसे ही पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं, जिन्हों ने अपनी जानों को (दाइमी) ख़सारे में डाल दिया है सो वोह ईमान नहीं लाएंगे।

وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ
لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۱﴾

21- और उससे बड़ा ज़ालिम कौन हो सक्ता है जिसने अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधा या उसने उसकी आयतों को झुटलाया? बेशक ज़ालिम लोग फ़लाह नहीं पाएंगे।

وَ یَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِیْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ
لِلَّذِیْنَ اَشْرَكُوْۤا اَیْنَ شُرَكَآؤُكُمُ
الَّذِیْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۲۲﴾

22- और जिस दिन हम सब को जमा' करेंगे फिर हम उन लोगों से कहेंगे जो शिर्क करते थे, तुम्हारे वोह शरीक कहां हैं जिन्हें तुम (मा'बूद) ख़याल करते थे?

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا
وَ اللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِیْنَ ﴿۲۳﴾

23- फिर उनकी (कोई) मा'ज़िरत न रहेगी बजुज़ इसके कि वोह कहें (गे:) हमें अपने रब अल्लाह की क़सम है हम मुशरिक न थे।

اُنْظُرْ كَیْفَ كَذَبُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَ
ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾

24- देखिए उन्हों ने ख़ुद अपने ऊपर कैसा झूट बोला और जो बोहतान वोह (दुनिया में) तराशा करते थे वोह उनसे ग़ाइब हो गया।

وَ مِنْهُمْ مَّنْ یَّسْتَمِعُ اِلَیْكَ ۚ
وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ
یَّفْقَهُوْهُ وَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَ اِنْ

25- और उनमें कुछ वोह (भी) हैं जो आपकी तरफ़ कान लगाए रहते हैं और हमने उनके दिलों पर (उनकी अपनी बद निय्यती के बाइस) परदे डाल दिए हैं (सो अब उनके लिए मुम्किन नहीं) कि वोह इस (क़ुर्आन) को

يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ
حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ
يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ
اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾

समझ सकें और (हमने) उनके कानों में डाट दे दी है, और अगर वोह तमाम निशानियों को (खुला भी) देख लें तो (भी) उस पर ईमान नहीं लाएंगे। हत्ता कि जब आपके पास आते हैं, आपसे झगड़ा करते हैं (उस वक़्त) काफ़िर लोग केहते हैं कि येह (क़ुर्आन) पहले लोगों की झूटी कहानियों के सिवा (कुछ) नहीं।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ
وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا
يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

26- और वोह (दूसरों को) इस (नबी की इत्तिबाअ् और क़ुर्आन) से रोकते हैं और (ख़ुद भी) इससे दूर भागते हैं, और वोह महज़् अपनी ही जानों को हलाक कर रहे हैं और वोह (इस हलाकत का) शऊ़र (भी) नहीं रखते।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا
يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا
وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾

27- अगर आप (उन्हें उस वक़्त) देखें जब वोह आग (के किनारे) पर खड़े किए जाएंगे तो कहेंगे ऐ काश! हम (दुनिया में) पलटा दिए जाएं तो (अब) हम अपने रब की आयतों को (कभी) नहीं झुटलाएंगे और ईमान वालों में से हो जाएंगे।

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ
قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا
عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾

28- (उस इक़रार में कोई सच्चाई नहीं) बल्कि उन पर वोह (सब कुछ) ज़ाहिर हो गया है जो वोह पहले छुपाया करते थे, और अगर वोह (दुनिया में) लौटा (भी) दिए जाएं तो (फिर) वोही दोहराएंगे जिससे वोह रोके गए थे और बेशक वोह (पक्के) झूटे हैं।

وَقَالُوْٓا اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا
وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾

29- और वोह (येही) केहते रहेंगे (जैसे उन्होंने पहले कहा था) कि हमारी इस दुन्यवी ज़िन्दगी के सिवा (और) कोई (ज़िन्दगी) नहीं और हम (मरने के बाद) नहीं उठाए जाएंगे।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ
قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا

30- और अगर आप (उन्हें उस वक़्त) देखें जब वोह अपने रब के हुज़ूर खड़े किए जाएंगे (और उन्हें) अल्लाह

بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۰﴾ ع ۳ ۱۰ ۹

फ़रमाएगा, क्या येह (ज़िन्दगी) ह़क़ नहीं है ? (तो) कहेंगे: क्यों नहीं हमारे रबकी क़सम (येह ह़क़ है, फिर) अल्लाह फ़रमाएगा : पस (अब) तुम अ़ज़ाब का मज़ा चखो, इस वजह से कि तुम कुफ़्र किया करते थे।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ
اللّٰهِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ
بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا
فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى
ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿۳۱﴾

31- पस ऐसे लोग नुक़्सान में रहे जिन्होंने अल्लाह की मुलाक़ात को झुटला दिया यहां तक कि जब उनके पास अचानक क़ियामत आ पहुंचेगी (तो) कहेंगे : हाए अफ़्सोस! हम पर जो हमने उस (क़ियामत पर ईमान लाए) के बारेमें (तफ़्सीर) की और वोह अपनी पीठों पर अपने (गुनाहों के) बोझ लादे हुए होंगे। सुन लो! वोह बहुत बुरा बोझ है जो येह उठा रहे हैं।

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ
وَ لَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۳۲﴾

32- और दुन्यवी ज़िन्दगी (की ऐ़शो इ़शरत) खेल और तमाशे के सिवा कुछ नहीं और यक़ीनन आख़िरत का घर ही उन लोगों के लिए बेहतर है जो तक़्वा इख़्तियार करते हैं, क्या तुम (येह ह़क़ीक़त) नहीं समझते।

قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ
يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ
وَ لٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
يَجْحَدُوْنَ ﴿۳۳﴾

33- (ऐ ह़बीब!) बेशक हम जानते हैं कि वोह (बात) यक़ीनन आपको रंजीदह कर रही है जो येह लोग केहते हैं । पस येह आपको नहीं झुटला रहे लेकिन (ह़क़ीक़त येह है कि) ज़ालिम लोग अल्लाहकी आयतों से ही इन्कार कर रहे हैं।

وَ لَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ
فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَ اُوْذُوْا
حَتّٰۤى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَ لَا مُبَدِّلَ
لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَ لَقَدْ جَآءَكَ مِنْ
نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۳۴﴾

34- और बेशक आपसे क़ब्ल (भी बहुतसे) रसूल झुटलाए गए मगर उन्होंने झुटलाए जाने और अज़िय्यत पहुंचाए जाने पर सब्र किया, ह़त्ताकि उन्हें हमारी मदद आ पहुंची और अल्लाह की बातों (या'नी वा'दों को) कोई बदलने वाला नहीं और बेशक आपके पास (तस्कीने क़ल्ब के लिए) रसूलों की ख़बरें आ चुकी हैं।

وَ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ
فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي
الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ
فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٥﴾

النصف

35- और अगर आप पर उनकी रूगर्दानी शाक़ गुज़र रही है (और आप बहर सूरत उनके ईमान लाने के ख़्वाहिश मन्द हैं) तो अगर आपसे (येह) हो सके कि ज़मीन में (उतरनेवाली) कोई सुरंग या आस्मान में (चढ़नेवाली) कोई सीढ़ी तलाश कर लें फिर (उन्हें दिखाने के लिए) उनके पास कोई (ख़ास) निशानी ले आएं (वोह तब भी ईमान नहीं लाएंगे), और अगर अल्लाह चाहता तो उनको हिदायत पर ज़रूर जमा' फ़रमा देता पस आप (अपनी रहमतो शफ़क़त के बे पायां जोश के बाइस उनकी बद बख़्ती से) बे ख़बर न हो जाएं।

اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ
وَ الْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ
يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٦﴾

وقف غفران

وقف منزل
عند المتقدمين على يسمعون

36- बात येह है कि (दा'वते हक़) सिर्फ़ वोही लोग कुबूल करते हैं जो (उसे सच्चे दिलसे) सुनते हैं, और मुर्दों (या'नी हक़ के मुन्किरों ) को अल्लाह (हालते कुफ़्र में ही क़ब्रों से) उठाएगा फिर वोह उसी (रब) की तरफ़ (जिसका इन्कार करते थे) लौटाए जाएंगे।

وَ قَالُوْا لَوْ لَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ
يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٧﴾

37- और उन्होंने कहा कि इस (रसूल) पर इसके रबकी तरफ़से (हर वक़्त साथ रहने वाली) कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई? फ़रमा दीजिए : बेशक अल्लाह इस बात पर (भी) क़ादिर है कि वोह (ऐसी) कोई निशानी उतार दे लेकिन उनमें से अक्सर लोग (उसकी हिक्मतों को) नहीं जानते।

وَ مَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَ لَا
طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ
اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ
مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ

38- और (ऐ इन्सानो!) कोई भी चलने फिरनेवाला (जानवर) और परिन्दा जो अपने दो बाज़ुओं से उड़ता हो (ऐसा) नहीं है मगर येह कि (बहुत सी सिफ़ात में) वोह सब तुम्हारे ही मुमासिल तब्क़ात हैं, हम ने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी (जिसे सराहतन या इशारतन बयान न कर दिया हो) फिर सब (लोग) अपने रबके पास जमा'

किए जाएंगे।

يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٨﴾

39- और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया वोह बेहरे और गूंगे हैं, तारीकियों में (भटक रहे) हैं। अल्लाह जिसे चाहता है उसे (इन्कारे हक़ और ज़िदके बाइस) गुमराह कर देता है, और जिसे चाहता है उसे (क़ुबूले हक़ के बाइस) सीधी राह पर लगा देता है।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّ بُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَ مَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٩﴾

40- आप (उन काफ़िरों से) फ़रमाइए : ज़रा येह तो बताओ अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाए या तुम पर क़ियामत आ पहुंचे तो क्या (उस वक़्त अ़ज़ाब से बचने के लिए) अल्लाहके सिवा किसी और को पुकारोगे? (बताओ) अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٠﴾

41- (ऐसा हरगिज़ मुम्किन नहीं) बल्कि तुम (अब भी) उसी (अल्लाह) को ही पुकारते हो फिर अगर वोह चाहे तो उन (मुसीबतों) को दूर फ़रमा देता है जिनके लिए तुम (उसे) पुकारते हो और (उस वक़्त) तुम उन (बुतों) को भूल जाते हो जिन्हें (अल्लाह का) शरीक ठेहराते हो।

بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَ تَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿٤١﴾ ع ١١ ١٠

42- और बेशक हमने आपसे पहले बहुत सी उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे, फिर हमने उनको (ना फ़रमानी के बाइस) तंगदस्ती और तक्लीफ़ के ज़रीए पकड़ लिया ताकि वोह (इज्ज़ो नियाज़ के साथ) गिड़गिड़ाएं।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٤٢﴾

43- फिर जब उन तक हमारा अ़ज़ाब आ पहुंचा तो उन्होंने आजिज़ी व ज़ारी क्यों न की? लेकिन (हक़ीक़त येह है कि) उनके दिल सख़्त हो गए थे और शैतानने उनके लिए वोह (गुनाह) आरास्ता कर दिखाए थे जो वोह किया करते थे।

فَلَوْ لَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَ لٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

44- फिर जब उन्होंने उस नसीहतको फ़रामोश कर दिया जो उनसे की गई थी तो हमने (उन्हें अपने अंजाम तक

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰٓى

إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ﴿٤٤﴾

पहुंचाने के लिए) उन पर हर चीज़ (की फ़रावानी) के दरवाज़े खोल दिए। यहां तकि जब वोह इन चीज़ों (की लिज़्ज़तों और राहतों) से ख़ूब ख़ुश हो (कर मदहोश हो) गए जो उन्हें दी गई थीं तो हमने अचानक उन्हें (अ़ज़ाब में) पकड़ लिया तो उस वक़्त वोह मायूस हो कर रेह गए।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٥﴾

45- पस ज़ुल्म करनेवाली क़ौमकी जड़ काट दी गई, और तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे जहानों का परवरदिगार है।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِهِ ۗ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ ﴿٤٦﴾

46- (उनसे) फ़रमा दीजिए कि तुम येह तो बताओ अगर अल्लाह तुम्हारी समाअ़त और तुम्हारी आँखें ले ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे (तो) अल्लाह के सिवा कौन मा'बूद ऐसा है जो येह (ने'मतें दोबारा) तुम्हारे पास ले आए ? देखिए हम किस तरह गूनागूं आयतें बयान करते हैं, फिर (भी) वोह रूगर्दानी किए जाते हैं।

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٧﴾

47 - आप (उनसे येह भी) फ़रमा दीजिए कि तुम मुझे बताओ अगर तुम पर अल्लाहका अ़ज़ाब अचानक या खुल्लम खुल्ला आन पड़े तो क्या ज़ालिम क़ौम के सिवा (कोई और) हलाक किया जाएगा ?

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنْذِرِينَ ۚ فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٨﴾

48- और हम पयग़म्बरों को नहीं भेजते मगर ख़ुशख़बरी सुनानेवाले और डर सुनानेवाले बना कर, सो जो शख़्स ईमान ले आया और (अ़मलन) दुरस्त हो गया तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न ही वोह ग़मगीन होंगे।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٤٩﴾

49- और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें अ़ज़ाब छू कर रहेगा, इस वजह से कि वोह ना फ़रमानी किया करते थे।

قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِیْ خَزَآىِٕنُ
اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَیْبَ وَ لَآ اَقُوْلُ
لَكُمْ اِنِّیْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا
یُوْحٰۤى اِلَیَّ ؕ قُلْ هَلْ یَسْتَوِی الْاَعْمٰى
وَ الْبَصِیْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۵۰﴾

50- आप (उन काफ़िरों से) फ़रमा दीजिए कि मैं तुम से (येह) नहीं केहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं अज़् खुद ग़ैब जानता हूं और न मैं तुमसे (येह) केहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं। मैं तो सिर्फ़ उसी (हुक्म) की पैरवी करता हूं जो मेरी तरफ़ वही किया जाता है। फ़रमा दीजिए : क्या अँधा और बीना बराबर हो सक्ते हैं ? सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते ?

وَ اَنْذِرْ بِهِ الَّذِیْنَ یَخَافُوْنَ اَنْ
یُّحْشَرُوْۤا اِلٰى رَبِّهِمْ لَیْسَ لَهُمْ
مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِیٌّ وَّ لَا شَفِیْعٌ لَّعَلَّهُمْ
یَتَّقُوْنَ ﴿۵۱﴾

51- और आप इस (कुरआन) के ज़रीए उन लोगों को डर सुनाइये जो अपने रबके पास इस हालमें जमा' किए जानेसे ख़ौफ़ज़दा हैं कि उनके लिए इसके सिवा न कोई मददगार हो और न (कोई) सिफ़ारिशी ताकि वोह परहेज़गार बन जाएं।

وَ لَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ
بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ
وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَیْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ
مِّنْ شَیْءٍ وَّ مَا مِنْ حِسَابِكَ
عَلَیْهِمْ مِّنْ شَیْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ
فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۲﴾

52- और आप उन (शिकस्ता दिल और ख़स्ता हाल) लोगों को (अपनी सोहूबतो कुर्बत से) दूर न कीजिए जो सुब्हो शाम अपने रबको सिर्फ़ उसकी रज़ा चाहते हुए पुकारते रेहते हैं। उनके (अमलो जज़ाके) हिसाब में से आप पर कोई चीज़ (वाजिब) नहीं और न आप के हिसाब में से कोई चीज़ उन पर (वाजिब) है (अगर) फिर भी आप उन्हें (अपने लुत्फ़ो करम से) दूर कर दें तो आप हक़ तल्फ़ी करनेवालों में से हो जाएंगे (जो आपके शायाने शान नहीं)।

وَ كَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ
لِّیَقُوْلُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ
مِّنْۢ بَیْنِنَا ؕ اَلَیْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ
بِالشّٰكِرِیْنَ ﴿۵۳﴾

53- और इसी तरह हम उनमें से बा'ज़ को बा'ज़ के ज़रीए आज़माते हैं ताकि वोह (दौलतमंद काफ़िर ग़रीब मुसलमानों को देख कर इस्तेहज़ाअन येह) कहें : क्या हममें से येही वोह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने एहसान किया है। क्या अल्लाह शुक्रगुज़ारों को खूब जाननेवाला नहीं है ?

وَ اِذَا جَآءَكَ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ

54- और जब आपके पास वोह लोग आएं जो हमारी

بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ
رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ
مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ
تَابَ مِنْ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵۴﴾

आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप (उनसे शफ़्क़तन) फ़रमाएं कि तुम पर सलाम हो तुम्हारे रबने अपनी ज़ात (के ज़िम्मए करम) पर रह़मत लाज़िम कर ली है। सो तुम में से जो शख़्स नादानी से कोई बुराई कर बैठे फिर उसके बाद तौबा कर ले और (अपनी) इस्लाह़ कर ले तो बेशक वोह बड़ा बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ
سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۵۵﴾ ع ۶ ۵ ۱۲

55- और इसी तरह़ हम आयतों को तफ़्सीलन बयान करते हैं और (येह) इस लिए कि मुजरिमों का रास्ता (सब पर) ज़ाहिर हो जाए।

قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّآ
اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ
اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿۵۶﴾

56- फ़रमा दीजिए कि मुझे इस बात से रोक दिया गया है कि मैं उन (झूटे मा'बूदों) की इबादत करूं जिन की तुम अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हो, फ़रमा दीजिए कि मैं तुम्हारी ख़्वाहिशात की पैरवी नहीं कर सक्ता अगर ऐसे हो तो मैं यक़ीनन बहक जाऊं और मैं हिदायत याफ़्ता लोगों से (भी) न रहूं (जो कि ना मुम्किन है)।

قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ
بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ
اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ
وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿۵۷﴾

57- फ़रमा दीजिए : (काफ़िरो!) बेशक मैं अपने रबकी तरफ़से रौशन दलील पर (क़ाइम) हूं और तुम उसे झुटलाते हो। मेरे पास वोह (अ़ज़ाब) नहीं है जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो। हुक्म सिर्फ़ अल्लाह ही का है। वोह ह़क़ बयान फ़रमाता है और वोही बेहतर फ़ैसला फ़रमानेवाला है।

قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ
بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۸﴾

58- (उनसे) फ़रमा दें अगर वोह (अ़ज़ाब ) मेरे पास होता जिसे तुम जल्दी चाहते हो तो यक़ीनन मेरे और तुम्हारे दरमियान काम तमाम हो चुका होता। और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जाननेवाला है।

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ

59- और ग़ैब की कुंजियां (या'नी वोह रास्ते जिस से

إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾

गैब किसी पर आशकार किया जाता है) उसी के पास (उस की क़ुदरतो मिल्किय्यत में) हैं उन्हें उसके सिवा (अज़ ख़ुद) कोई नहीं जानता, और वोह हर उस चीज़को (बिला वास्ता) जानता है जो ख़ुश्की में और दरियाओं में है, और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर (येह कि) वोह उसे जानता है और न ज़मीनकी तारीकियोंमें कोई (ऐसा) दाना है और न कोई तर चीज़ है और न कोई ख़ुश्क चीज़ मगर रौशन किताबमें (सब कुछ लिख दिया गया है)।

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾ ع ٧ ٥ ١٣

60- और वोही है जो रात के वक़्त तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ फ़रमा लेता है और जो कुछ तुम दिनके वक़्त कमाते हो वोह जानता है फिर वोह तुम्हें दिन में उठा देता है ताकि (तुम्हारी ज़िन्दगी की) मुअ़य्यना मीआ़द पूरी कर दी जाए फिर तुम्हारा पलटना उसी की तरफ़ है फिर वोह (रोज़े महूशर) तुम्हें उन (तमाम आ'माल) से आगाह फ़रमा देगा जो तुम (उस ज़िन्दगानी में) करते रहे थे।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ﴿٦١﴾

61- और वोही अपने बंदों पर ग़ालिब है और वोह तुम पर (फ़रिश्तों को बतौर) निगेहबान भेजता है, यहां तक कि जब तुममें से किसी को मौत आती है (तो) हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वोह ख़ता (या कोताही) नहीं करते।

ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۚ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۖ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ﴿٦٢﴾

62- फिर वोह (सब) अल्लाह के हुज़ूर लौटाए जाएंगे जो उनका मालिके हक़ीक़ी है, जान लो! हुक्म (फ़रमाना) उसी का (काम) है, और वोह सब से जल्द हिसाब करने वाला है।

قُلْ مَن يُنَجِّيكُم مِّن ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۖ

63- आप (उन से दरयाफ़्त) फ़रमाएं कि बयाबान और दरियाकी तारीकियों से तुम्हें कौन नजात देता है ?

لَئِنْ اَنْجٰنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾

(उस वक़्त तो) तुम गिड़गिड़ा कर (भी) और चुपके चुपके (भी) उसीको पुकारते हो कि अगर वोह हमें इस (मुसीबत) से नजात दे दे तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ारों में से हो जाएंगे।

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَ مِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾

64- फ़रमा दीजिए : कि अल्लाह ही तुम्हें इस (मुसीबत) से और हर तक्लीफ़ से नजात देता है तुम फिर (भी) शिर्क करते हो।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

65- फ़रमा दीजिए : वोह इस पर क़ादिर है कि तुम पर अ़ज़ाब भेजे (ख़्वाह) तुम्हारे ऊपरकी तरफ़से या तुम्हारे पाँव के नीचे से या तुम्हें फ़िरक़ा फ़िरक़ा करके आपस में भिड़ाए और तुम में से बा'ज़ को बा'ज़ की लड़ाई का मज़ा चखा दे। देखिए! हम किस किस तरह आयतें बयान करते हैं ताकि येह (लोग) समझ सकें।

وَ كَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَ هُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾ؕ

66- और आपकी क़ौमने इस (क़ुरआन) को झुटला डाला हालां कि वोह सरासर हक़्क़ है फ़रमा दीजिए : मैं तुम पर निगेहबान नहीं हूं।

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۫ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾

67- हर ख़बर (के वाक़ेअ होने) का वक़्त मुक़र्रर है और तुम अ़नक़रीब जान लोगे।

وَ اِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾

68- और जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो हमारी आयतों में (कज बह़सी और इस्तेह़ज़ा में) मशग़ूल हों तो तुम उनसे कनाराकश हो जाया करो यहां तक कि वोह किसी दूसरी बात में मशग़ूल हो जाएं, और अगर शैतान तुम्हें (येह बात) भुला दे तो याद आने के बाद तुम (कभी भी) ज़ालिम क़ौम के साथ न बैठा करो।

وَ مَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ

69- और लोगों पर जो परहेज़गारी इख़्तियार किए हुए हैं

حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾

उन (काफ़िरों) के हिसाब से कुछ भी (लाज़िम) नहीं है मगर (उन्हें) नसीहत (करना चाहिए) ताकि वोह (कुफ़्र से और क़ुर्आन की मज़म्मत से) बच जाएं।

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّ
لَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا
وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا
كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ
عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ
شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا
كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ ع ٨ ١٤

70- और आप उन लोगों को छोड़े रखिए जिन्हों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है और जिन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दे रखा है और इस (क़ुर्आन)के ज़रीए (उनकी आगाही की ख़ातिर) नसीहत फ़रमाते रहिए ताकि कोई जान अपने किए के बदले सुपुर्दे हलाकत न कर दी जाए (फिर) उसके लिए अल्लाह के सिवा न कोई मददगार होगा और न कोई सिफ़ारिशी और अगर वोह (जान अपने गुनाहों का) पूरा पूरा बदला (या'नी मुआवज़ा)भी दे तो (भी) उससे क़ुबूल नहीं किया जाएगा। येही वोह लोग हैं जो अपने किए के बदले हलाकत में डाल दिए गए उनके लिए खौलते हुऐ पानी का पीना है और दर्दनाक अज़ाब है इस वजह से कि वोह कुफ़्र किया करते थे।

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا
لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى
اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ
كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى
الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ
يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ
اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ
وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾

71- फ़रमा दीजिए, क्या हम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़की इबादत करें जो हमें न (तो) नफ़ा' पहुंचा सके और न (ही) हमें नुक़्सान दे सके और इसके बाद कि अल्लाह ने हमें हिदायत दे दी हम उस शख़्स की तरह अपने उलटे पाँव फिर जाएं जिसे ज़मीनमें शैतानों ने राह भुला कर दरमान्दह व हैरतज़दा कर दिया हो जिसके साथी उसे सीधी राह की तरफ़ बुला रहे हों कि हमारे पास आ जा (मगर उसे कुछ सूझता न हो)। फ़रमा दें कि अल्लाह की हिदायत ही (हक़ीक़ी) हिदायत है, और (इसी लिए) हमें (येह) हुक्म दिया गया है कि हम तमाम जहानों के रब की फ़रमांबरदारी करें।

وَ اَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اتَّقُوْهُ ؕ وَ
هُوَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾

72- और येह (भी हुक्म हुआ है) कि तुम नमाज़ क़ाइम रखो और उससे डरते रहो और वोही अल्लाह है जिसकी तरफ़ तुम (सब) जमा' किए जाओगे।

وَ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ وَ يَوْمَ يَقُوْلُ
كُنْ فَيَكُوْنُ ۘ قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَ لَهُ
الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ؕ
عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ؕ وَ هُوَ
الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿۷۳﴾

73- और वोही (अल्लाह) है जिसने आस्मानों और ज़मीनको हक़ (पर मब्नी तदबीर) के साथ पैदा फ़रमाया है और जिस दिन वोह फ़रमाएगा हो जो तो वोह (रोज़े महूशर बपा) हो जाएगा। उसका फ़रमान हक़ है, और उस दिन उसी की बादशाही होगी जब (इसराफ़ील के जरीए) सूरमें फूंक मारी जाएगी, (वोही) हर पोशीदह और ज़ाहिर का जाननेवाला है, और वोही बड़ा हिक्मतवाला ख़बरदार है।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ
اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْۤ
اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۷۴﴾

74- और (याद कीजिए)जब इब्राहीम (عليه السلام)ने अपने बाप आज़र (जो हक़ीक़ीत में चचा था महावरए अरब में उसे बाप कहा गया है) से कहा : क्या तुम बुतों को मा'बूद बनाते हो? बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को सरीह गुमराही में (मुब्तिला) देखता हूं।

وَ كَذٰلِكَ نُرِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ
مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿۷۵﴾

75- और इसी तरह हमने इब्राहीम (عليه السلام)को आस्मानों और ज़मीनकी तमाम बादशाहतें (या'नी अजाइबाते ख़ल्क) दिखाईं और (येह) इस लिए कि वोह ऐनुल यक़ीनवालों में हो जाए।

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ
قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ
لَاۤ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿۷۶﴾

76- फिर जब उन पर रातने अंधेरा कर दिया तो उन्हों ने (एक) सितारा देखा (तो) कहा :(क्या तुम्हारे ख़याल में) येह मेरा रब है? फिर जब वोह डूब गया तो (अपनी क़ौम को सुना कर) केहने लगे : मैं डूब जानेवालों को पसंद नहीं करता।

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا
رَبِّيْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ

77- फिर जब चांद को चमकते देखा (तो) कहा : (क्या तुम्हारे ख़याल में) येह मेरा रब है? फिर जब वोह (भी)

يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿٧٧﴾

गाइब हो गया तो (अपनी कौम को सुना कर) केहने लगे : अगर मेरा रब मुझे हिदायत न फ़रमाता तो मैं भी ज़रूर(तुम्हारी तरह) गुमराहों की क़ौम में से हो जाता।

فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾

78- फिर जब सूरजको चमकते देखा (तो) कहा : (क्या अब तुम्हारे ख़याल में) येह मेरा रब है (क्यों कि) येह सबसे बड़ा है? फिर जब वोह (भी) छुप गया तो बोल उठे : ऐ लोगो! मैं इन (सब चीजों) से बेज़ार हूं जिन्हें तुम (अल्लाह का) शरीक गरदानते हो।

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّ مَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾

79- बेशक मैंने अपना रुख़ (हर सम्त से हटा कर) यकसूई से उस (ज़ात) की तरफ़ फेर लिया है जिसने आस्मानों और ज़मीन को बेमिसाल पैदा फ़रमाया है और (जान लो कि) मैं मुशरिकों में से नहीं हूं।

وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ؕ وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ؕ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾

80- और उनकी कौम उनसे बहसो जिदाल करने लगी (तो) उन्हों ने कहा : भला तुम मुझसे अल्लाह के बारे में झगडते हो हालांकि उसने मुझे हिदायत फ़रमा दी है, और मैं उन (बातिल मा'बूदों) से नहीं डरता जिन्हें तुम उसका शरीक ठेहरा रहे हो मगर (येह कि) मेरा रब जो कुछ (ज़रर) चाहे (पहुंचा सक्ता है)। मेरे रबने हर चीज़ को (अपने) इल्म से अहाते में ले रखा है, सो क्या तुम नसीहत क़ुबूल नहीं करते?

وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ؕ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ

81- और मैं उन (मा'बूदाने बातिला) से क्यों कर ख़ौफ़ज़दा हो सक्ता हूं जिन्हें तुम (अल्लाह का) शरीक ठेहराते हो दर आं हाली कि तुम उस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह के साथ (बुतों को) शरीक बना रखा है (जबकि) उसने तुम पर उस (शिर्क) की कोई दलील नहीं उतारी (अब तुम ही जवाब दो) सो हर दो फ़रीक़ में से

وقف لازم

إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾
الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا
إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ
وَهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾ ع ٩ ١٢ ١٥
وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ
قَوْمِهِ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَنْ
نَشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾
وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا
هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ ۖ وَ
مِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُودَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ
وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۚ وَ
كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾
وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ
وَإِلْيَاسَ ۖ كُلٌّ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٥﴾
وَإِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ
وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٨٦﴾
وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَ
إِخْوَانِهِمْ ۖ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ
إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٨٧﴾

(अ़ज़ाब से) बेख़ौफ़ रेहनेका ज़ियादा ह़क़दार कौन है? अगर तुम जानते हो।

82- जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान को (शिर्क के) ज़ुल्म के साथ नहीं मिलाया उन्हीं लोगों के लिए अम्न (या'नी उख़रवी बेख़ौफ़ी) है और वोही हिदायत याफ़्ता हैं।

83- और येही हमारी (तवह़ीद की)दलील थी जो हमने इब्राहीम (عليه السلام) को उनकी (मुख़ालिफ़)क़ौम के मुक़ाबले में दी थी। हम जिसके चाहते हैं दरजात बुलंद कर देते हैं। बेशक आपका रब बड़ी ह़िक्मतवाला ख़ूब जानने वाला है।

84- और हमने उन (इब्राहीम عليه السلام) को इस्ह़ाक़ और या'कूब (बेटा और पोता (عليهم السلام) अ़ता किए हमने (उन) सब को हिदायत से नवाज़ा और हमने (उनसे) पहले नूह (عليه السلام) को (भी) हिदायत से नवाज़ा था और उनकी अवलाद में से दावूद और सुलैमान और अैयूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून (عليهم السلام) को भी हिदायत अ़ता फ़रमाई थी), और हम इसी तरह नेकूकारों को जज़ा दिया करते हैं।

85- और ज़करिय्या और यह़्या और ईसा और इल्यास (عليهم السلام) को भी हिदायत बख़्शी)। येह सब नेकूकार (कुर्बत और ह़ुज़ूरीवाले) लोग थे।

86- और इस्माईल और अल यसा' और यूनुस और लूत (عليهم السلام) को भी हिदायत से शर्फ़याब फ़रमाया), और हमने उन सबको (अपने ज़माने के) तमाम जहानवालों पर फ़ज़ीलत बख़्शी।

87- और उनके आबाओ (अज्दाद) और उनकी अवलाद और उनके भाइयों में से भी (बा'ज़ को ऐसी फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई) और हमने उन्हें (अपने लुत्फ़े ख़ास और बुज़ुर्गी के लिए) चुन लिया था और उन्हें सीधी

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ لَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۸﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۰﴾ ع ۱۰ ۸ ۱۲

राह की तरफ़ हिदायत फ़रमा दी थी।

88- येह अल्लाह की हिदायत है वोह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसके ज़रीए रहनुमाई फ़रमाता है, और अगर (बिल फ़र्ज़) येह लोग शिर्क करते तो उनसे वोह सारे आ'माले (ख़ैर) ज़ब्त (या'नी नीस्तो नाबूद) हो जाते जो वोह अंजाम देते थे।

89- (येही) वोह लोग हैं जिन्हें हमने किताब और हुक्मे (शरीअ़त) और नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई थी। फिर अगर येह लोग (या'नी कुफ़्फ़ार) उन बातों से इन्कार कर दें तो बेशक हमने उन (बातों) पर (ईमान लाने के लिए) ऐसी क़ौम को मुक़र्रर कर दिया है जो उनसे इन्कार करने वाले नहीं (होंगे)।

90- (येही) वोह लोग (या'नी पयग़म्बराने ख़ुदा) हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत फ़रमाई है पस (ऐ रसूले आख़िरुज़्ज़मां!) आप उनकी (फ़ज़ीलतवाले सब) तरीक़ों (को अपनी सीरतमें जमा' करके उन) की पैरवी करें (ता कि आपकी ज़ात में उन तमाम अंबिया-व-रुसुल के फ़ज़ाइलो कमालात यकजा हो जाएं), आप फ़रमा दीजिए : (ऐ लोगो!) मैं तुम से उस (हिदायत की फ़राहमी) पर कोई उजरत नहीं मांगता, येह तो सिर्फ़ जहानवालों के लिए नसीह़त है।

وَ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَىْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِىْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّ هُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَ تُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَ عُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَ لَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ

91- और उन्होंने (या'नी यहूदने) अल्लाह की वोह क़दर न जानी जैसी क़दर जानना चाहिए थी जब उन्हों ने येह केह (कर रिसालते मुह़म्मदी ﷺ का इन्कार कर) दिया कि अल्लाहने किसी आदमी पर कोई चीज़ नहीं उतारी। आप फ़रमा दीजिए : वोह किताब किसने उतारी थी जो मूसा (علیہ السلام) ले कर आए थे जो लोगों के लिए रौशनी और हिदायत थी? तुमने जिसके अलग अलग काग़ज़ बना लिए हैं तुम उसे (लोगों पर) ज़ाहिर (भी) करते हो और (उस में से) बहुत कुछ छुपाते (भी) हो और तुम्हें वोह (कुछ) सिखाया गया है जो न तुम जानते थे और न तुम्हारे

قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾

बापदादा, आप फ़रमा दीजिए : (येह सब) अल्लाह (ही का करम है) फिर आप उन्हें (उनके ह़ाल पर) छोड़ दें कि वोह अपनी ख़ुराफ़ात में खेलते रहें।

وَ هٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَ لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَ مَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾

92- और येह (वोह) किताब है जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है, बा बरकत है, जो किताबें इससे पहले थीं उनकी (अस्लन) तस्दीक़ करने वाली है। और (येह) इस लिए (नाज़िल की गई है) कि आप (अव्वलन) सब (इन्सानी) बस्तियों के मरकज़ (मक्का) वालों को और (सानियन सारी दुनिया में) उसके इर्द गिर्दवालों को डर सुनाएं, और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं उस पर वोही ईमान लाते हैं और वोही लोग अपनी नमाज़ की पूरी हिफ़ाज़त करते हैं।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّ مَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَ لَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْۤا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

93- और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधे या (नुबुव्वत का झूटा दा'वा करते हुए येह) कहे कि मेरी तरफ़ वह़ी की गई है हालांकि उसकी तरफ़ कुछ भी वह़ी न की गई हो और (उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा) जो (ख़ुदाई का झूटा दा'वा करते हुए येह) कहे कि मैं (भी) अ़नक़रीब ऐसी ही (किताब) नाज़िल करता हूं जैसी अल्लाह ने नाज़िल की है, और अगर आप (उस वक़्त का मन्ज़र) देखें जब ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में (मुब्तिला) होंगे और फ़रिश्ते (उनकी तरफ़) अपने हाथ फैलाए हुए होंगे और (उनसे केहते होंगे) तुम अपनी जानें जिस्मों से निकालो। आज तुम्हें सज़ा में ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जाएगा। इस वजह से कि तुम अल्लाह पर ना ह़क़ बातें किया करते थे और तुम उसकी आयतों से सरकशी किया करते थे।

وَ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ تَرَكْتُمْ مَّا

94- और बेशक तुम (रोज़े क़ियामत) हमारे पास उसी तरह तन्हा आओगे जैसे हमने तुम्हें पहली मरतबा (तन्हा)

خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَ ضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾ ع

पैदा किया था और (अमवालो अवलाद में से) जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा था वोह सब अपनी पीठ पीछे छोड़ आओगे, और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखेंगे जिनकी निस्बत तुम (येह) गुमान करते थे कि वोह तुम्हारे (मुआमलात) में हमारे शरीक हैं। बेशक (आज) तुम्हारा बाहमी तअ़ल्लुक़ (व ए'तिमाद)मुन्क़ते' हो गया और वोह (सब) दा'वे जो तुम किया करते थे तुम से जाते रहे।

اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَ النَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ مُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَىِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾

95- बेशक अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ निकालनेवाला है वोह मुर्दह से ज़िन्दा को पैदा फ़रमाता है और ज़िन्दा से मुर्दह को निकालनेवाला है, येही (शानवाला) तो अल्लाह है फिर तुम कहां बेहके फिरते हो।

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَ جَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾

96- (वोही) सुब्ह् (की रौशनी) को रात का अंधेरा चाक कर के निकालनेवाला है, और उसीने रातको आराम के लिए बनाया है और सूरज और चांदको हिसाबो शुमार के लिए, येह बहुत ग़ालिब बड़े इ़ल्म वाले (रब) का मुकर्ररह अंदाज़ा है।

وَ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِىْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾

97- और वोही है जिसने तुम्हारे लिए सितारों को बनाया ताकि तुम उनके ज़रीए़ बियाबानों और दरियाओं की तारीकियों में रास्ते पा सको । बेशक हमने इ़ल्म रखनेवाली क़ौम के लिए (अपनी) निशानियां खोल कर बयान कर दी हैं।

وَ هُوَ الَّذِىْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّ مُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾

98- और वोही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें एक जान (या'नी एक खुल्ये) से पैदा फ़रमाया है फिर (तुम्हारे लिए) एक जाए इक़ामत (है) और एक जाए अमानत (मुराद रहूमे मादर और दुनिया है या दुनिया और क़ब्र है)। बेशक हम ने समझनेवाले लोगों के लिए (अपनी क़ुदरत की) निशानियां खोल कर बयान कर दी हैं।

وَهُوَ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ
فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَیْءٍ
فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ
حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَ مِنَ النَّخْلِ مِنْ
طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِیَةٌ وَّ جَنّٰتٍ مِّنْ
اَعْنَابٍ وَّالزَّیْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ
مُشْتَبِهًا وَّ غَیْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْۤا
اِلٰی ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَیَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِیْ
ذٰلِكُمْ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۹۹﴾

99- और वोही है जिसने आस्मान की तरफ़से पानी उतारा फिर हमने उस (बारिश) से हर क़िस्म की रूईदगी निकाली फिर हमने उससे सर सब्ज़(खेती) निकाली जिससे हम ऊपर तले पेवस्ता दाने निकालते हैं और खजूर के गाभे से लटकते हुए गुच्छे और अंगूरों के बाग़ात और ज़ैतून और अनार (भी पैदा किए जो कई ऐ'तिबारात से) आपसमें एक जैसे (लगते) हैं और (फल, ज़ाइक़े और तासीरात) जुदागाना हैं। तुम दरख़्त के फल की तरफ़ देखो जब वोह फल लाए और उसके पकने को (भी देखो), बेशक उनमें ईमान रखनेवालों के लिए निशानियां हैं।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ
وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِیْنَ وَبَنٰتٍ بِغَیْرِ عِلْمٍ ؕ
سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰی عَمَّا یَصِفُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ ۱۲ ع ۱۸

100- और उन काफ़िरों ने जिन्नात को अल्लाह का शरीक बनाया हालांकि उसीने उनको पैदा किया था और उन्हों ने अल्लाह के लिए बिगैर इल्म (व दानिश) के लड़के और लड़कियां (भी) घड़ लीं। वोह इन (तमाम) बातों से पाक और बुलंदो बाला है जो येह (उससे मुतअ़ल्लिक़) करते फिरते हैं।

بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰی
یَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّ لَمْ تَكُنْ لَّهٗ
صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ ۚ وَهُوَ
بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۱۰۱﴾

101- वोही आस्मानों और ज़मीन का मूजिद है, भला उसकी अवलाद क्यों कर हो सक्ती है हालां कि उसकी बीवी (ही) नहीं है, और उसीने हर चीज़को पैदा फ़रमाया है और वोह हर चीज़को खूब जाननेवाला है।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ
وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ وَّكِیْلٌ ﴿۱۰۲﴾

102- येही (अल्लाह) तुम्हारा परवरदिगार है उसके सिवा कोई लाइक़े इ़बादत नहीं (वोही) हर चीज़ का ख़ालिक़ है पस तुम उसी की इ़बादत किया करो और वोह हर चीज़ पर निगेहबान है।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ؗ وَهُوَ یُدْرِكُ

103- निगाहें उसका इहाता नहीं कर सक्तीं और वोह

الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾

सब निगाहों का इहाता किए हुए है, और वोह बड़ा बारीक बीन बड़ा बा ख़बर है।

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾

104- बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिबसे (हिदायत की) निशानियां आ चुकी हैं पस जिसने (उन्हें निगाहे बसीरत से) देख लिया तो (येह) उसकी अपनी ज़ातके लिए (फ़ाइदामंद) है, और जो अँधा रहा तो उसका वबाल (भी) उसी पर है, और मैं तुम पर निगेहबान नहीं हूं।

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾

105- और हम इसी तरह (अपनी) आयतों को बार बार (अंदाज़ बदल कर) बयान करते हैं और येह इस लिए कि वोह (काफ़िर) बोल उठें कि आपने (तो कहीं से) पढ़ लिया है ताकि हम उसको जानने वाले लोगों के लिए ख़ूब वाज़ेह कर दें।

اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾

106- आप इस (क़ुरआन) की पैरवी कीजिए जो आप की तरफ़ आपके रबकी जानिबसे वही किया गया है अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और आप मुशरिकों से कनाराकशी कर लीजिए।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾

107- और अगर अल्लाह (उनको जब्रन रोकना) चाहता तो येह लोग (कभी) शिर्क न करते, और हमने आपको (भी) उन पर निगेहबान नहीं बनाया और न आप उन पर पासबान हैं।

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ

108- और (ऐ मुसलमानो!) तुम उन (झूटे मा'बूदों) को गाली मत दो जिन्हें येह (मुशरिक लोग) अल्लाह के सिवा पूजते हैं फिर वोह लोग (भी जवाबन) जहालत के बाइस ज़ुल्म करते हुए अल्लाह की शान में दुश्नाम तराज़ी करने लगेंगे। इसी तरह हमने हर फ़िरक़ा (व जमाअ़त) के लिए उनका अ़मल (उनकी आँखों में) मरग़ूब कर रखा है (और

فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٠٨﴾

वोह उसी को हक़ समझते रेहते हैं) फिर सबको अपने रब ही की तरफ़ लौटना है और वोह उन्हें उन आ'माल के नताइज से आगाह फ़रमा देगा जो वोह अंजाम देते थे।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٩﴾

109- वोह बड़े ताकीदी हलफ़ के साथ अल्लाह की क़सम खाते हैं कि अगर उनके पास कोई (खुली) निशानी आ जाए तो वोह उस पर ज़रूर ईमान ले आएंगे। (उनसे) केह दो कि निशानियां तो सिर्फ़ अल्लाह ही के पास हैं और (ऐ मुसलमानो!) तुन्हें क्या ख़बर कि जब वोह निशानी आ जाएगी (तो) वोह (फिर भी) ईमान नहीं लाएंगे।

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١٠﴾ ع ١٣ ١٠ ١٩

110- और हम उनके दिलों को और उनकी आँखों को (उनकी अपनी बद निय्यती के बाइस क़ुबूले हक़) से (उसी तरह) फेर देंगे जिस तरह वोह उस (नबी) पर पहली बार ईमान नहीं लाए (सो वोह निशानी देख कर भी ईमान नहीं लाएंगे) और हम उन्हें उनकी सरकशी (ही) में छोड़ देंगे कि वोह भटकते फिरें।